यूपी विधानसभा चुनाव 2027 में

विकल्प बनने को तैयार है यह पार्टी?

एक तरफ जहाँ उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2027 में होना सम्भावित है वही दूसरी तरफ वर्तमान राजनीतिक परिवेश में कई कारणों से उथल - पुथल मची हुई है 7 भारतीय जनता पार्टी अपने आप को हर संभव प्रयास से तीसरी बार लगातार सरकार बनाने की कवायद शुरू कर चुकी है वही समाजवादी पार्टी भी रेस में बनी हुई है 7 बहुजन समाजवादी पार्टी और कांग्रेस कुछ बड़ा खेल कर जाये फ़िलहाल ऐसा कोई जमीनी हकीकत नहीं दिख रही है

2022 के चुनाव में जहाँ भारतीय जनता पार्टी 255 सीटों पर अकेले चुनाव विजेता रही वही समाजवादी पार्टी 111 सीटों पर, बहुजन समाजवादी पार्टी महज एक सीट जीत पायी थी 7 देश की राजनीति का केंद्र बिंदु उत्तर प्रदेश हमेशा से अपने अलग राजनीतिक व्यवहार के लिए जाना जाता रहा है 7

अपनी कुर्सी बचाने के लिए देश और प्रदेश पहले हिन्दू मुस्लिम में राजनेताओ ने विभाजित करने में अहम् भूमिका निभाया और उसके पश्चात् हिन्दू हिन्दू को विभाजित करके अपन राजनीतिक वर्चस्व बनाये रखने की कोशिश हो रही है ऐसे में अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ऋषि त्रिवेदी ने 150 विधानसभा सीटों पर चुनाव लड़ने की घोषणा करके राजनीतिक अखाड़े में नई बहस को जन्म दे दिया है 7 विभिन्न राजनीतिक पार्टियों पर एक लेवल लगा हुआ है की अमुक पार्टी इस समुदाय जाति या मजहब के लोगों की ही वही अखिल भारतीय हिन्दू महासभा ने अपने नारे 'जात पात की करों बिदाई, हिन्दू हिन्दू भाई भाई.... के जरिये आम लोगों में तेजी से अपनी पकड़ मजबूत कर रही है 7

अखिल भारतीय हिन्दू महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ऋषि त्रिवेदी ने लगातार हिन्दू एकता को बढावा देने के अनेकों कार्य किये है और धर्म के प्रचार-प्रसार में लगातार संलग्न है 7 उनके द्वारा हले में एक दिन सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ नजदीकी मंदिर में करने की मुहीम को व्यापक सहयोग मिल रहा है 7 लक्ष्मण टीला के मुद्दे पर कोर्ट में वह एक पक्षकार है 7 विभिन्न समाजिक मुद्दों को लेकर कई बार जेल भी जा चुके है 7 हिन्दू एकता की बात प्रत्येक प्लेटफार्म पर खुलकर कहते है और हिन्दू राष्ट्र बनाने के लिए लगातार कार्य उनके निर्देशन में हो रहा है 7 लोकसभा चुनाव 2024 में प्रथम किन्नर महामंडलेश्वर हिमांगी सखी को बनारस से चुनाव लड़ने की घोषणा ऋषि त्रिवेदी ने ही किया था जिससे पूर्व में भी सरकार की बेचैनी देखी जा सकती थी 7 सलेमपुर लोकसभा से हिंदू महासभा प्रत्याशी श्री नारायण मिश्रा की वजह से ही भाजपा हारी और रविंद्र कुशवाहा लगभग 4000 वोटो से जीते थे 7 गोरखपुर लोकसभा सीट से भी सुधांशु श्रीवास्तव जी ने मजबूती के साथ अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी 7

उनकी चुनाव लड़ने की घोषणा से राजनीतिक परिदृश्य अब खुली आँखों से कोई भी आंकलित नहीं कर सकता है क्योंकि हल फिलहाल में केंद्र और राज्य सरकार के कई ऐसे निर्णय लिए है जिससे हिन्दू हिन्दू से बटता हुआ दिखाई पड़ा है 7 ऐसे में नाराज लोगों का हिन्दू महासभा में जाना स्वाभाविक भी है 7 चुनाव लड़ने की प्रतिबद्धता 150 सीटों पर घोषणा करने के पूर्व जमीनी रूप से लोगो को एकत्रित वर्षो से चले आ रहे है 7 उत्तर प्रदेश के लिए ऋषि त्रिवेदी एक ऐसा नाम है जो कार्य को जमीनी स्तर पर करने के लिए जाना जाता है 7

यह दिलचस्प होगा की आगामी विधानसभा चुनाव में किसे सत्ता मिलती है किसे नहीं पर ऋषि त्रिवेदी द्वारा लगातार जमीनी स्तर पर कार्य करने और हिन्दुओं को जोड़ने के लिए चलाये जा रहे सार्थक मुहीम के आधार पर कहा जा सकता है की उनकी पार्टी अखिल भारतीय हिन्दू महासभा विधान सभा चुनाव 2027 के लिए प्रदेश में नए विकल्प बनने के लिए सारी रणनीति बना चुकी है और उनके लाखो कार्यकर्तृता और साथी लगातार इस मुहीम को सार्थक बनाने हेतु कार्य कर रहें है 7 तेजी से हिन्दुओ का उनके साथ जुड़ना और उनके कार्यक्रमों में भारी भीड़ का जुटना, संगठन का मजबूत होना इस बात को प्रदर्शित करता है की यह पार्टी उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2027 में अपनी अहम् भूमिका जरुर अदा करेगी और वर्षो से स्थापित राजनीतिक पार्टियों के लिए एक नई चुनौति के रूप में सामने आ सकती है

डॉ अजय कुमार मिश्रा

भूतपूर्व छात्र सम्मेलन का आयोजन

आनंद सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर आनंद,गुजरात द्वारा भूतपूर्व छात्र सम्मेलन (एलुमिनाई मीट) का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में स. प. वि. के हिन्दी में भी काफी संख्या में भूतपूर्व छात्र एकत्रित हुए जिन्होंने एक कमेटी का भी गढ़न किया, जो हिन्दी विभाग के साथ मिलकर वर्ष भर में 4 से 5 साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करेगी।

इन भूतपूर्व छात्रों ने सर्वसम्मति से डॉ. सामंत मकवाना को अध्यक्ष के रूप में चुना साथ ही उपाध्यक्ष के रूप में डॉ. अनिला मिश्रा, मंत्री डॉ. भरतसिंह झाला, सहमंत्री डॉ. खन्ना प्रसाद अमीन, खजांची डॉ. चिराग परमार चुने गए । कमेटी के संकलन सदस्यों में शंकरभाई मारवाड़ी, डॉ. भावना ठक्कर, डॉ. महेन्द्र सिंह परमार, जितेन्द्र बंजारा नामित हुए । यह कमेटी प्रो. मदनमोहन शर्मा और भानु भाई रोहित के मार्गदर्शन में कार्य करेगी ।

भूतपूर्व छात्रों द्वारा आयोजित होने वाले इन प्रत्येक कार्यक्रमों के भोजन और नाश्ते के खर्च की जिम्मेदारी अध्यक्ष डॉ. सामंत मकवाना जी ने ली । भूतपूर्व छात्रों की इस कमेटी का गढ़न हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दिलीप मेहरा जी के नेतृत्व में किया गया ।

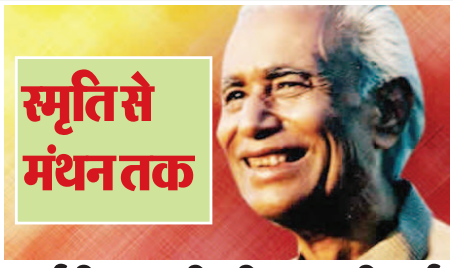

धर्मवीर भारती की शताब्दी वर्ष की नैतिक चेतना और महत्व

किसी साहित्यकार की शताब्दी केवल जन्मतिथि का औपचारिक उत्सव नहीं होती; वह समय के साथ पुनः संवाद का अवसर होती है। शताब्दी वर्ष हमें यह प्रश्न करने का साहस देता है कि उस रचनाकार की उपस्थिति आज भी कितनी जीवित है। धर्मवीर भारती के संदर्भ में यह प्रश्न और भी प्रासंगिक हो उठता है, क्योंकि उनका साहित्य केवल अपने युग की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि हर युग के नैतिक द्वंद्व का साक्ष्य है।

भारती न पूर्ण आस्थावादी थे, न कट्टर संशयवादी। वे उन विरल रचनाकारों में थे जिनके लिए प्रश्न करना ही सृजन का प्रथम संस्कार था। उनकी लेखनी मनुष्य के भीतर छिपे प्रकाश और अंधकार–दोनों को समान निर्भीकता से उद्घाटित करती है।

इतिहास की पृष्ठभूमि में मनुष्य-भारती का साहित्य इतिहास को घटनाओं की श्रृंखला के रूप में नहीं, बल्कि नैतिक कसौटी के रूप में देखता है। उनका कालजयी नाटक अंधायुग महाभारत के युद्धोत्तर प्रसंगों को आधार बनाकर सभ्यता के आत्मसंकट को सामने लाता है। किंतु इसका केंद्र युद्ध नहीं, युद्ध के बाद का शून्य है–वह गहन रिक्तता, जिसमें विजेता भी पराजित-सा खड़ा दिखाई देता है।

'अंधायुग' बताता है कि नैतिक दृष्टि के बिना कोई भी विजय अंततः पराजय में रूपांतरित हो जाती है। आज के वैश्विक संघर्षों, वैचारिक ध्रुवीकरण और सांस्कृतिक असहिष्णुता के दौर में यह नाटक हमारे समय का भी दस्तावेज़ प्रतीत होता है। भारती हमें सावधान करते हैं कि यदि मनुष्य अपने भीतर के विवेक को खो देता है, तो पूरा युग अंधकारमय हो उठता है।

प्रेम: अधिकार नहीं, उत्तरदायित्व-भारती के साहित्य में प्रेम केवल भावनात्मक आवेग नहीं है; वह आत्मिक तपस्या है। उनका चर्चित उपन्यास गुनाहों का देवता आधुनिक मध्यवर्गीय संवेदना का गहन आख्यान है। चंदर और सुधा का संबंध केवल प्रेम-कथा नहीं, बल्कि निर्णयहीनता, सामाजिक मर्यादा और आत्मग्लानि का मनोवैज्ञानिक अध्ययन है। यह कृति हमें सिखाती है कि प्रेम यदि नैतिक परिपक्वता से संयुक्त न हो, तो वह आत्मपीड़ा का कारण बन सकता है। आज के संबंधों की त्वरिता और भावनात्मक अस्थिरता के बीच यह उपन्यास एक चेतावनी भी है और एक मार्गदर्शन भी।

स्त्री-स्वर की पुनर्स्थापना-भारती की सृजनात्मक संवेदना का एक अद्वितीय आयाम कनुप्रिया में दिखाई देता है। यहाँ राधा केवल प्रतीक्षा करती प्रेमिका नहीं, बल्कि आत्मचेतना से संपन्न स्त्री है। वह प्रश्न करती है, अपनी आकांक्षाओं को पहचानती है और अपने प्रेम को अपनी शर्तों पर परिभाषित करती है।

'कनुप्रिया' इस अर्थ में आधुनिक काव्य-दृष्टि का महत्वपूर्ण उदाहरण है कि वह मिथक को स्थिर न मानकर उसे पुनर्परिभाषित करती है। आज जब स्त्री-अस्मिता, आत्मनिर्णय और भावनात्मक स्वायत्तता के प्रश्न अधिक तीव्रता से उठ रहे हैं, भारती की यह कृति नए अर्थों में प्रासंगिक हो उठती है।

आधुनिकता की नैतिक समीक्षा-भारती आधुनिकता के विरोधी नहीं थे; वे उसके विवेकपूर्ण अनुशीलन के पक्षधर थे। उनके लेखन में बार-बार यह चिंता व्यक्त होती है कि तकनीकी प्रगति मनुष्य को सुविधा तो दे सकती है, परंतु संवेदना नहीं। आज के डिजिटल युग में, जहाँ संवाद त्वरित है पर संबंध उथले होते जा रहे हैं, भारती का साहित्य हमें आत्ममंथन के लिए बाध्य करता है। वे पूछते हैं–क्या प्रगति का अर्थ केवल भौतिक उन्नति है? क्या मनुष्य अपनी जड़ों से कटकर वास्तव में विकसित हो सकता है? यह प्रश्न आज भी उतना ही असुविधाजनक है, जितना उनके समय में था।

पत्रकारिता: विचार और संस्कृति का सेतु-साहित्य के अतिरिक्त, भारती का सांस्कृतिक नेतृत्व भी उल्लेखनीय है। 'धर्मयुग' के संपादक के रूप में उन्होंने हिंदी पत्रकारिता को केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि विचार और संस्कृति का मंच बनाया। उन्होंने साहित्य, कला और सामाजिक विमर्श को एक ही छत के नीचे स्थान देकर पाठकों के बौद्धिक क्षितिज का विस्तार किया। उनकी संपादकीय दृष्टि में संतुलन और साहस दोनों थे। उन्होंने लोकप्रियता और गंभीरता के बीच एक ऐसा सेतु निर्मित किया, जो आज भी आदर्श माना जा सकता है।

शताब्दी का अर्थ: पुनर्पाठ और पुनर्जागरण-शताब्दी वर्ष केवल स्मरण का अवसर नहीं, पुनर्पाठ का आग्रह भी है। आज जब नैतिक मानदंड धुंधले हो रहे हैं, संबंध क्षणभंगुर होते जा रहे हैं और आस्था तथा विवेक के बीच तनाव गहरा रहा है, भारती का साहित्य हमें संतुलन की राह दिखाता है। वे हमें सिखाते हैं कि मनुष्य का वास्तविक उत्थान बाहरी उपलब्धियों से नहीं, बल्कि आंतरिक परिष्कार से संभव है। आस्था यदि विवेक से संयुक्त हो और आधुनिकता यदि परंपरा से संवादरत रहे, तभी सभ्यता टिकाऊ बन सकती है।

गजेंद्र
शोधार्थी, बी.बी.ए.यू.
(केंद्रीय विश्वविद्यालय), लखनऊ

कृत्रिम बुद्धिमत्ता उर्फ एआई: मुकाबले में इंसानी अक्ल

कम्प्यूटर, इंटरनेट के बाद अब हमारे संसार में 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' यानि 'एआई' का अवतार हुआ है। कहा जा रहा है कि इंसानी वजूद की तमाम-ओ-तमाम हरकतें 'एआई' की मार्फत आसानी से हल कर ली जाएंगी। यहां तक कि सोचने-विचारने की अनूठी इंसानी फितरतें भी 'एआई' के जरिए होने लगेंगी। हाल में दिल्ली में हुआ 'एआई इम्पैक्ट समिट 2026' इसी नवाचार के व्यापार को जमाने की कोशिश था। क्या हुआ था, उस 'समिट' में?

पिछले दिनों दिल्ली में आयोजित 'एआई इम्पैक्ट समिट 2026' का समापन 'कृत्रिम बुद्धिमत्ता' (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के क्षेत्र में वैश्विक सहयोग के लिए उसके प्रभाव पर ऐतिहासिक 'नई दिल्ली घोषणापत्र' को स्वीकार किए जाने के साथ समाप्त हुआ। करीब 91 देशों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने इस घोषणापत्र से सहमति जाहिर की। घोषणापत्र जोर देता है कि 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' में निहित सिद्धान्त की तर्ज पर 'एआई' के लाभों को मानवता के बीच समान रूप से साझा किया जाना चाहिए। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' से प्रेरित यह घोषणा 'एआई' संसाधनों तक न्यायसंगत पहुंच पर बल देती है, ताकि सभी देश सार्वजनिक लाभ के लिये उसे विकसित कर सकें।

इस शिखर सम्मेलन से दीर्घकालिक अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों को बढ़ावा मिलने और 'एआई' को आर्थिक विकास के एक प्रमुख चालक के रूप में स्थापित करने की उम्मीद है। आयोजकों का कहना है कि शिखर सम्मेलन से दीर्घकालिक साझेदारियों को मजबूती मिलने और देशों को साझा सिद्धांतों को व्यावहारिक रूप में बदलने के लिए प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद है। विकसित अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों दोनों की भागीदारी के साथ, 'नई दिल्ली घोषणा' 'एआई' विकास पर आम सहमति बनाने और तकनीकी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए एक व्यापक वैश्विक प्रयास का प्रतीक है।

तेजी से बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों में दुनिया भर में अभी सबसे ज्यादा जोर आधुनिक तकनीकों के विकास और नवाचार के प्रयोग पर दिया जा रहा है। सभी देश अपनी विकास नीतियों में अद्यतन तकनीकों को अपना रहे हैं और पारंपरिक तरीके से होने वाले बहुत सारे कामों का स्वरूप बदल रहा है। खासतौर पर 'एआई' के फैलते दायरे ने वैश्विक स्तर पर कामकाज के तौर-तरीकों और उसमें इंसानी भूमिका पर व्यापक असर डाला है। जानकारों का कहना है कि 'एआई' आज केवल तकनीक का विषय नहीं रह गई है, बल्कि यह समाज, अर्थव्यवस्था, राजनीति और मानव जीवन के हर पहलू को प्रभावित करने वाली शक्ति बन चुकी है। स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि, उद्योग, संचार, सुरक्षा और शासन-हर क्षेत्र में 'एआई' के उपयोग ने नई संभावनाएं खोली हैं, वहीं कई गहरी और जटिल चुनौतियां भी हमारे सामने खड़ी कर दी हैं।

'एआई' को अक्सर चौथी औद्योगिक क्रांति का केंद्र माना जाता है। मशीन लर्निंग, डेटा एनालिटिक्स और स्वचालन ने उत्पादन की गति बढ़ाई है और निर्णय प्रक्रिया को तेज किया है। अस्पतालों में रोगों की पहचान, किसानों के लिए मौसम और फसल की सलाह तथा प्रशासन में सेवाओं का डिजिटलीकरण 'एआई' की सकारात्मक उपलब्धियां हैं, लेकिन यह तकनीकी बदलाव केवल औजारों का नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं का भी पुनर्गठन कर रहा है। 'एआई' आधारित स्वचालन से कई पारंपरिक नौकरियां समाप्त होने की आशंका है। खासकर निम्न और मध्यम कौशल वाले काम सबसे अधिक प्रभावित हो सकते हैं। दूसरी ओर, उच्च तकनीकी कौशल वाली नौकरियों की मांग बढ़ रही है। इससे सामाजिक असमानता गहराने का खतरा है। यदि पुनः कौशल (रिस्किलिंग) और शिक्षा पर गंभीर निवेश नहीं हुआ, तो तकनीक लाभ के बजाय विभाजन का कारण बन सकती है।

'एआई' का आधार 'डेटा' है और यही सबसे बड़ा जोखिम भी है। नागरिकों के व्यक्तिगत 'डेटा' का अंधाधुंध संग्रह, उसका व्यावसायिक उपयोग और राज्य द्वारा निगरानी, निजता के अधिकार को कमजोर कर रहे हैं। 'फेस रिकग्नीशन' जैसी तकनीकें सुरक्षा के नाम पर लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं के लिए खतरा बन सकती हैं। सवाल यह है कि तकनीक का नियंत्रण किसके हाथ में होगा–जनता के या सत्ता और कॉरपोरेट के? 'एआई' 'तटस्थ' नहीं होता, वह उसी 'डेटा' और सोच को दोहराता है जिस पर उसे प्रशिक्षित किया गया है। यदि 'डेटा' में जाति, लिंग, वर्ग या नस्ल का पक्षपात है, तो 'एआई' के फैसले भी भेदभावपूर्ण होंगे। न्याय व्यवस्था, भर्ती प्रक्रियाओं और ऋण वितरण जैसे क्षेत्रों में इसका असर गंभीर हो सकता है। इसलिए 'एआई' की नैतिकता और जवाबदेही अत्यंत महत्वपूर्ण है।

'एआई' तकनीक पर फिलहाल कुछ गिने-चुने देशों और बहुराष्ट्रीय कंपनियों का वर्चस्व है। इससे एक नया डिजिटल उपनिवेशवाद उभरने का खतरा है, जहां विकासशील देश केवल उपभोक्ता बनकर रह जाएंगे। भारत जैसे देशों के लिए यह जरूरी है कि वे 'एआई' को केवल बाजार नहीं, बल्कि सार्वजनिक हित के औजार के रूप में विकसित करें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को न तो अंधी प्रशंसा की जरूरत है और न ही भयभीत होकर खारिज करने की। आवश्यकता है, लोकतांत्रिक नियंत्रण, मजबूत कानूनी ढांचा, नैतिक मानक और जनहित केंद्रित नीति की। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक न्याय के लिए 'एआई' का उपयोग तभी सार्थक होगा, जब मानव गरिमा, समानता और अधिकारों को प्राथमिकता दी जाए। अंततः सवाल तकनीक का नहीं, हमारे सामाजिक दृष्टिकोण का है।

'एआई' भविष्य तय करेगा या भविष्य में 'एआई' को कैसे इस्तेमाल किया जाए, यह फैसला हमें ही करना होगा। भारत में 'एआई' की संभावनाओं का उपयोग करने के लिये सुदृढ़ कौशल-विकास, पुनः कौशल विकास तथा 'एआई' साक्षरता संबंधी पहल आवश्यक हैं। प्रतिस्पर्द्धी 'एआई' विकास के लिये आवश्यक उन्नत कंप्यूटिंग अवसंरचना, सेमीकंडक्टर विनिर्माण और हाइपरस्केल 'डेटा' केंद्रों की भारत में कमी है। इधर, बड़ी कंपनियां खर्च घटाने के लिए 'एआई' टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल कर रही हैं और नौकरियां कम कर रही हैं। इसी बीच, 'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (आईएमएफ) की चीफ क्रिस्टलीना जॉर्जीवा ने नौकरियों पर 'एआई' के बढ़ते खतरे को लेकर एक बड़ी चेतावनी दी है। उन्होंने कहा है कि दुनियाभर में करीब 40 प्रतिशत एंट्री-लेवल नौकरियों पर 'एआई' का खतरा मंडरा रहा है। उन्होंने यह भी कहा कि यह आंकड़ा बढ़कर 60 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। हालांकि भारत के लिए यह 26 फीसदी हो सकता है।

'एआई' भविष्य में मानव सभ्यता के लिए खतरा बनने की संभावना एक वैश्विक बहस का विषय है। कई विशेषज्ञ, शोधकर्ता और तकनीकी दिग्गज इस बात पर चिंता व्यक्त कर चुके हैं कि अनियंत्रित 'एआई' विकास मानवता के लिए अस्तित्व का संकट पैदा कर सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि 'एआई' का विकास और उसे लागू करने की गति, उसके सुरक्षा मानकों से तेज रही, तो यह मानवता के लिए अस्तित्व के लिए खतरा बन सकता है। लेखक और पत्रकार प्रियदर्शन कहते हैं कि इंटरनेट ने हमारी स्मृति छीनी थी, 'एआई' कल्पनाशीलता न छीन ले। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए भविष्य की योजना बनाई जाने की आवश्यकता है।

राजकुमार सिन्हा
'बरगी बांध विस्थापित संघ' के वरिष्ठ कार्यकर्तृता हैं